214hi21

# 21

# भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्मुख चुनौतियां

देश के प्रत्येक नागरिक को, एक अच्छा जीवन बिताने का अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी न्यूनतम आवश्यकताएं, जैसे भोजन, स्वास्थ्य की सुरक्षा, आवास, मौलिक शिक्षा आदि को पूरा करने के योग्य होना चाहिए। परन्तु भारत एक निर्धन देश है, जहां कुल जनसंख्या के बहुत बड़े भाग के पास इन सब चीजों को प्राप्त करने की क्षमता नहीं है। इस वास्तविकता के कारण यह और अधिक बुरा हो जाता है क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था, पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं करा सकती जिससे कि निर्धन लोगों को नौकरी मिल सके और वे आय कमा सकें इसलिए, निर्धनता और बेरोजगारी का उन्मूलन हमारी अर्थव्यवस्था के सम्मुख एक बहुत बड़ी चुनौती है। इसी प्रकार जीवन की ऊँची गुणवत्ता को उचित शिक्षा प्राप्त करके, और स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाओं के द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। क्योंकि जनसंख्या की दृष्टि से, भारत एक बहुत बड़ा देश है, सरकार द्वारा इसके सभी नागरिकों को, शिक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा का प्रबंध करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। सरकार के सामने, एक दूसरी चिंता, बाजार में वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमतें हैं जिसे मुद्रा स्फीति कहते हैं। बढ़ती हुई कीमतों का निर्धन और मध्यम वर्ग के लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए, कीमत स्तर पर नियंत्रण करना, जब भी आवश्यक हो, एक बहुत बड़ी समस्या है। अंत में, जनसंख्या और उसकी आवश्यकताओं के बढ़ने के साथ राष्ट्र की आय भी बढ़नी चाहिए जिससे कि विकास की प्रक्रिया चलती रहे। इसलिए, प्रत्येक वर्ष आर्थिक संवृद्धि प्राप्त करना, अर्थव्यवस्था के सम्मुख एक बहुत बड़ी चुनौती है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- निर्धनता का अर्थ तथा सरकार द्वारा निर्धनता उन्मूलन और रोजगार उपलब्ध कराने के लिए अपनाई गई योजनाएं;
- सरकार द्वारा शिक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए उठाये गये कदम;

- कीमतों में वृद्धि या मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने की विधियां;
- सरकार द्वारा उच्च आर्थिक संवृद्धि के लिए की जाने वाली व्यूह रचना।

## 21.1 निर्धनता और बेरोजगारी को हल करना

भारत में निर्धन कौन है? **भारत सरकार के योजना आयोग के अनुसार, कोई भी व्यक्ति जिसे अपने भोजन से ग्रामीण क्षेत्र में 2400 कि. कैलोरी और शहरी क्षेत्र में 2100 कि. कैलोरी नहीं मिल पाती, निर्धन कहलाता है।** हम भारत में इसे गरीबी रेखा कहते हैं। इस गरीबी रेखा की व्याख्या कैसे की जाए? आप जानते हैं कि हमें जीवित रहने के लिए भोजन सबसे अधिक आवश्यक है। हम अपने शरीर को ऊर्जा देने के लिए भोजन करते हैं जिससे कि हम कुछ कार्य कर सकें। ऊर्जा का माप कैसे किया जाता है? हमारे शरीर की प्रतिदिन ऊर्जा की न्यूनतम आवश्यकता क्या है?

ऊर्जा को कि.कैलोरी के रूप में मापा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी आजीविका कमाने के लिये लोग बहुत सा कठिन कार्य करते हैं। प्रबुद्ध व्यक्तियों के अनुसार किसी व्यक्ति द्वारा ऐसे कार्य करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में 2400 कि.कैलोरी और शहरी क्षेत्र में 2100 कि. कैलोरी की आवश्यकता है। यह कैलोरी प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति को, अनाज, दालें और सब्जियों आदि के रूप में कुछ भोजन की मात्रा की आवश्यकता होती है। इन खाद्य मदों को खरीदने के लिए व्यक्ति के पास कुछ मात्रा में मुद्रा होनी चाहिए। इससे यह संकेत मिलता है कि **यदि व्यक्ति काम के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए, भोजन खरीदने के लिए, अनिवार्य राशि कमाने में समर्थ नहीं होता, तो वह व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे या स्पष्ट रूप से निर्धन कहलाता है।**

इस आधार पर यह पाया जाता है कि भारत में लगभग कुल जनसंख्या का 27.5 प्रतिशत भाग वर्ष 2004-05 में निर्धन था जो लगभग 27 करोड़ था। किन्तु क्या आपके विचार में, निर्धनता केवल खाये गये भोजन के रूप में ही मापी जानी चाहिए। अन्य अनिवार्य मदें, जैसे वस्त्र, जूते आदि भी न्यूनतम आवश्यकताओं के अंदर आने चाहिए। इसका तात्पर्य है इन सब मदों को खरीदने के लिए और अधिक राशि की आवश्यकता है। भारत सरकार के अनुसार, यदि भोजन, वस्त्र, जूते और दूसरे गैर खाद्य मदें भी शामिल कर लिये जाएं तो भारतीय जनसंख्या का 37 प्रतिशत से अधिक भाग, अर्थात 37 करोड़ से अधिक लोग निर्धन थे।

इसी प्रकार, रोजगार के विषय में भी भारत की स्थिति अच्छी नहीं है। गरीबी का एक प्रमुख कारण उन व्यक्तियों में बेरोजगारी है जो काम करने के इच्छुक हैं। भारत में उद्योगों, शिक्षा और प्रशिक्षण की धीमी वृद्धि बेरोजगारी के प्रमुख कारण हैं। हमारी कृषि पर भी जनसंख्या का अधिक भार है और उसमें रोजगार, मौसमी है। जब फसल की कटाई का काम समाप्त हो जाता है, कृषि श्रमिक और किसान बेरोजगार हो जाते हैं। भारत में वर्ष 2010 तक श्रम-शक्ति की जनसंख्या लगभग 43 करोड़ थी। श्रम शक्ति से अभिप्राय उन व्यक्तियों से है जो कार्य कर सकते हैं और जिनकी आयु 15 वर्ष से 59 वर्ष के आयु वर्ग में है। दैनिक आधार पर लगभग 3 या 4 करोड़ या श्रम शक्ति के लगभग 8 प्रतिशत लोगों को रोजगार नहीं मिलता।

## 21.2 रोजगार उत्पन्न करना या निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम

निर्धनता दूर करने और अपने नागरिकों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए सरकार क्या कर रही है? इन गंभीर समस्याओं को हल करने के लिए, भारत की सरकार स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से नीतियां बनाती रही है और बहुत सी धन राशि खर्च करती रही है। यही कारण है गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की जनसंख्या समय के साथ घट रही है, भले ही धीमी गति से। इसी प्रकार बेरोजगारी की दर को नियंत्रण से बाहर बढ़ने नहीं दिया गया है। यह सरकार द्वारा निम्न कार्यक्रम लागू करने के कारण सम्भव हो पाया है।

### 1. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना (MGNREGS)

इस योजना का उद्देश्य, ग्रामीण जनसंख्या को, एक वर्ष में कम से कम 100 दिनों का वेतन रोजगार गारन्टी के साथ उपलब्ध कराना है। कार्य, अकुशल शारीरिक कार्य की प्रकृति का है। यह योजना, वर्ष 2006 में भारत के 200 जिलों में प्रारंभ की गई थी। फिर 2008 में इसकी घोषणा पूरे देश के लिए की गई। किसी परिवार का कोई भी ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाला वयस्क सदस्य, एक वर्ष में, 100 दिन का शारीरिक कार्य दैनिक मजदूरी के आधार पर कर सकता है। वर्ष 2010 में, दिसम्बर के महीने तक लगभग 4.1 करोड़ परिवार, इस योजना के अन्तर्गत लाभ उठा चुके थे। वर्ष 2010-11 में सरकार ने इस योजना को चलाने के लिए 40100 करोड़ रु. की राशि निर्धारित की थी।

### 2. स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY)

यह योजना अप्रैल 1999 में प्रारंभ की गई। इस योजना का उद्देश्य, ग्रामीण गरीब लोगों की, स्वरोजगार के माध्यम से, आय सृजन करने की क्षमता को बढ़ाने में सहायता करना है। इस योजना का प्राथमिक केन्द्र बिन्दु अनुसूचित जाति और जनजाति तथा स्त्रियां हैं। किन्तु अन्य भी इसका लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस योजना के अन्तर्गत गरीब लोगों को प्रशिक्षण, बैंक से ऋण और अन्य सुविधाएं दी जाती हैं जिससे कि वे निर्धनता को दूर करने की अपनी क्षमता का निर्माण कर सकें। व्यक्ति, जो अपना स्वयं का कार्य करते हैं स्वनियोजित या स्वरोजगारी कहलाते हैं। यह योजना, मुख्य रूप से इन स्वरोजगारियों के लिए है। इस योजना के अंतर्गत, निर्धन परिवारों को प्रशिक्षण देने के लिए सरकार ने हर जिले में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की है। लगभग 77000 ग्रामीण युवक इस योजना के अंतर्गत, दिसम्बर 2010 तक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

### 3. स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना (SJSRY)

इस योजना का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में रहने वाले गरीब परिवारों को रोजगार उपलब्ध कराना है। यह योजना सर्वप्रथम 1997 में आरंभ की गई। इसके बाद 2009 में बहुत से नये प्रयास आरम्भ किये गये जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

(i) स्वरोजगार सृजन करने के कार्यक्रम

(ii) ग्रामीण स्त्रियों के लिए कार्यक्रम

(iii) शहरी निर्धनों के लिए प्रशिक्षण

(iv) सामुदायिक विकास कार्यक्रम

(v) वेतन रोजगार कार्यक्रम

सरकार ने वर्ष 2010-11 के लिये स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना के लिए 590 करोड़ रु. की राशि निर्धारित की। इस योजना के अंतर्गत, दिसम्बर 2010 तक, कुल 6 लाख 50 हजार से अधिक परिवार लाभ उठा चुके हैं।

### पाठगत प्रश्न 21.1

1. ग्रामीण क्षेत्रों के लिए गरीबी रेखा क्या है?
2. भारत में श्रम शक्ति की जनसंख्या क्या है?
3. शहरी गरीबी को हल करने की योजना का नाम दो।

## 21.3 शिक्षा उपलब्ध कराना

हमारे राष्ट्र के सामने दूसरी चुनौती सभी नागरिकों को शिक्षित करना है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत, महिलाओं की 65.46 प्रतिशत और वयस्कों की 74.04 प्रतिशत है। भारत सरकार ने सभी लोगों को शिक्षित करने के लिए निम्न उपाय किये हैं।

### 1. बच्चों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

भारत सरकार ने वर्ष 2009 में 6 से 14 वर्ष के आयु के सभी बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा एक मौलिक अधिकार बना दिया है। यह नियम अप्रैल 2010 से लागू कर दिया गया है। अब 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चे निशुल्क शिक्षा का दावा कर सकते है और सरकार इसे उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अनुसार सरकार अधिक से अधिक प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय खोलेगी और पढ़ाने के लिए शिक्षकों को नियुक्त करेगी।

### 2. प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए योजना

प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के विकास के लिए मुख्य योजनाएं नीचे दी गई हैं:

(i) सर्व शिक्षा अभियान **(SSA)**

सर्व शिक्षा अभियान 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को शिक्षा देने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्य सरकारों की साझेदारी में लागू किया गया है। शिक्षा के अधिकार

के अधिनियम जो बाद में आया, को ध्यान में रखते हुए सर्व शिक्षा अभियान में उसी प्रकार सुधार किया गया है। इस योजना के उद्देश्य हैं

(अ) विद्यालय में सभी बच्चों का नामांकन

(ब) बच्चों को विद्यालय में उच्च प्राथमिक स्तर तक रखना

(स) 'विद्यालय के कैम्प में वापस' भेज कर सत्कार करना

(द) शिक्षा की गारंटी देने वाले केन्द्र स्थापित करना

(ड) शिक्षा देने में जाति, लिंग आदि के कारण आने वाले अंतर को समाप्त करना।

सितम्बर 2010 तक 309, 727 नये विद्यालय थे जिनमें 11 लाख से अधिक अध्यापकों की नियुक्ति की गई थी। लगभग 9 करोड़ बच्चों को पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए सर्व शिक्षा अभियान में मुख्य प्रारंभिक स्तर पर बालिकाओं को शिक्षा देने की योजना नामक एक मुख्य घटक है। इस योजना के अन्तर्गत बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए हर समूह में आदर्श विद्यालयों की स्थापना की जा रही है। वर्दी और अध्ययन सामग्री आदि बालिकाओं को निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। इस योजना के अन्तर्गत बालिका विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है।

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिकाओं के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय नाम के आवासीय विद्यालय भी हैं। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं में से 75 प्रतिशत अनुसूचित जाति और जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति और अल्प संख्यक समुदाय भी हैं। शेष 25 प्रतिशत उन परिवारों की हैं जो गरीबी रेखा से नीचे हैं। 2 लाख से अधिक बालिकाओं का नाम मार्च 2010 तक कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में नामांकित किया गया हैं।

### (ii) विद्यालयों में दोपहर का भोजन उपलब्ध कराने का राष्ट्रीय कार्यक्रम

बच्चों को विद्यालय में आकर्षित करने और उन्हें रोकने के लिए सरकार ने दोपहर के भोजन का कार्यक्रम प्रारंभ किया है। इसके पीछे मंशा यह है कि बच्चों को अच्छा भोजन देकर स्वास्थ्यवर्धक आहार उपलब्ध कराया जाय। दोपहर का भोजन समाज के विभिन्न वर्गों के बच्चों को निकट लाता है और एक दूसरे के प्रति सद्भावना का विकास करता है। 14 करोड़ से अधिक बच्चों को 2009-10 में इससे लाभ हुआ।

### (iii) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान माध्यमिक स्तर पर प्रवेश लेने वाले बच्चों का अनुपात बढ़ाने के लिए वर्ष 2009 में प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के कुल

व्यय का 75 प्रतिशत केन्द्रीय सरकार वहन करती है जबकि 25 प्रतिशत राज्य सरकारें उपलब्ध कराती हैं। उत्तर पूर्वीय क्षेत्रों के लिए यह अनुपात 90 : 10 है।

### (iv) विकलांगों के लिए माध्यमिक स्तर पर समावेशित शिक्षा (IEDSS)

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता के लिए सरकार ने 2009-10 से माध्यमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा कार्यक्रम प्रारंभ किया। इसका उद्देश्य नवीं से बारहवीं कक्षा के स्तर तक अध्ययन करने वाले विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए 100 प्रतिशत केन्द्रीय सहायता उपलब्ध कराना है।

### (v) साक्षर भारत

15 वर्ष से अधिक आयु के युवकों में शिक्षा और साक्षरता को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने अपने राष्ट्रीय साक्षरता लक्ष्य को साक्षर भारत के रूप में पुनः ढाला है। इस कार्यक्रम का विशेष केन्द्र बिन्दु महिलायें होंगी।

## 3. उच्च और तकनीकी शिक्षा का कार्यक्रम

विद्यालयों से शिक्षा पास करने के पश्चात उच्च शिक्षा, कॉलेज शिक्षा से प्रारंभ होती है। उच्च और तकनीकी शिक्षा में कला, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, इंजिनियरिंग, औषधि, सूचना प्रौद्योगिक में स्नातक शामिल हैं। यदि कोई देश शिक्षित समाज की स्थापना करना चाहता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशों के साथ प्रतियोगिता करना चाहता है तो उसे अपनी उच्च और तकनीकी शिक्षा के स्तर में सुधार करना चाहिए। भारत सरकार ने उच्च और तकनीकी शिक्षा में विकास के लिये अनेक कदम उठाये हैं जो कि नीचे दिये गये हैं :

1. ग्यारहवी योजना अवधि में केन्द्रीय सरकार ने राज्य सरकारों के सहयोग से आठ नये विश्वविद्यालय, 10 नये इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित करने का उद्देश्य बनाया है।
2. नये आदर्श कॉलेजों की देश के पिछडे हुए जिलों में स्थापना की जायेगी।
3. सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए 20 नये भारतीय सूचना प्रोद्योगिकी संस्थान स्थापित किये जाएगें।
4. राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान और भारतीय तकनीकी संस्थान के रूप में और अधिक इंजीनियरिंग कॉलेज बनाये जाऐंगे जो वर्ष 2011-12 से भारत के विभिन्न भागों में कार्य करने लगेंगे।
5. विज्ञान में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 5 भारतीय विज्ञान और अनुसंधान संस्थानों की देश के विभिन्न भागों में स्थापना की है।
6. अन्त में ग्यारहवी पंचवर्षीय योजना में 5 नये इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट काम करने लगे हैं और 2011-12 में 2 और कार्य आरंभ कर देंगे।

## पाठगत प्रश्न 21.2

1. सर्व शिक्षा अभियान के तीन उद्देश्य बताओ।
2. बालिकाओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए सुझाव दीजिए।
3. 'दोपहर का भोजन योजना' का एक लाभ बतायें।

## 21.4 स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करना

देश के सम्मुख एक अन्य मुख्य चुनौती लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराना है। स्वास्थ्य सुरक्षा के अभाव में प्रति 100,000 महिलाओं में से 254 स्त्रियां बच्चों को जन्म देते समय मर जाती हैं। इसे **मातृत्व मृत्यु दर** कहते हैं। प्रति 1000 बच्चों में से 50 जन्म के समय मर जाते हैं जिसे **शिशु मृत्यु दर** कहते हैं। प्रति हजार 15 बच्चे 4 वर्ष की आयु पूरा करने से पहले मर जाते हैं जिसे **बाल मृत्यु दर** कहते हैं। निश्चय ही ये सूचनाएं उत्साहवर्धक नहीं हैं। देश में बहुत से गांव और दूर दराज क्षेत्र हैं किन्तु शहरों और कस्बों की तरह इन क्षेत्रों में लोगों की समस्याओं पर ध्यान देने के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य केन्द्र या अस्पताल और डाक्टर नहीं हैं।

2010-11 में सरकार ने स्वास्थ्य सुरक्षा पर कुल व्यय का केवल 5 प्रतिशत खर्च किया जो हमारे राष्ट्रीय आय का केवल 1.27 प्रतिशत है। हमारा पड़ौसी देश श्रीलंका भी प्रति व्यक्ति स्वास्थ्य सेवाओं पर भारत से अधिक व्यय करता है।

आइये, स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने में सरकार की भूमिका को देखें।

### (i) राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM)

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की स्थापना, 2005 में ग्रामीण जनसंख्या को वहन करने योग्य एवं गुणात्मक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए की गई। इसका उद्देश्य बीमारियां जैसे मलेरिया, कालाजार, अंधापन, आयोडीन की कमी, तपेदिक, कुष्ठ रोग, फाइलेरिया आदि को दूर करने के लिए जनता को जन स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करके स्वास्थ्य और परिवार कल्याण योजनाओं को मजबूत बनाना है। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन वर्तमान प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्राण फूंकने के लिए आरंभ किया गया है। सितम्बर 2010 तक लगभग 8 लाख स्वास्थ्य कर्मचारियों को स्वास्थ्य सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया है और 9 हजार से अधिक डाक्टरों और 26 हजार नर्सों को ग्रामीण जनसंख्या को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए अनुबंध के आधार पर नियुक्त किया गया है। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य निगम बहुत सी सचल चिकित्सा इकाईयां भी चला रहा है जो लोगों को घर बैठे स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर आती जाती रहती हैं।

### (ii) जननी सुरक्षा योजना (JSY)

सरकार ने, बच्चे को जन्म देते समय मां के जीवन को बचाने के लिए जननी सुरक्षा योजना आरंभ की।

### (iii) प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (PMSSY)

भारत में स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाएं समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। कुछ राज्यों में चिकित्सा संस्थान, कॉलेज, अस्पताल के रूप में बहुत अच्छी स्वास्थ्य आधारित संरचना उपलब्ध है। जबकि दूसरे राज्यों में ये सुविधाएं नहीं हैं। इससे स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाओं की उपलब्धता में क्षेत्रीय असंतुलन पैदा हो गया है और कहीं पर अधिक भीड़ पायी जाती है जहां वे सुविधाएं उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली में स्थित है और एक विश्व स्तर का चिकित्सा संस्थान और अस्पताल है। क्योंकि अन्य राज्यों में ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं है, भिन्न-भिन्न राज्यों से लोग इस संस्थान में उपचार कराने के लिए दिल्ली आते हैं। इसका परिणाम यह है कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान चिकित्सा संस्थान में अधिक भीड़ हो गई है और इलाज कराने के लिए अधिक समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इन समस्याओं का निदान करने के लिए, भारत सरकार ने प्रधान मंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना आरंभ की है। इस योजना के अंतर्गत अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जैसे 6 नये संस्थान देश के विभिन्न भागों में स्थापित किये जायेंगे। इसका उद्देश्य विभिन्न राज्यों में विद्यमान 12 सरकारी चिकित्सा कॉलेजों का स्तर ऊँचा करना भी है।

### (iv) राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण

एड्स (Acquired Immune Deficiency Syndrome) एक भयानक स्वास्थ्य अव्यवस्था है जो उन लोगों को प्रभावित करती है जो HIV से संक्रमित हैं। भारत में 2009 में लगभग 24 लाख लोग HIV से प्रभावित थे जो विश्व में सर्वाधिक में से एक है। एक बार HIV नामक विषाणु मनुष्य के शरीर पर आक्रमण करता है तो मनुष्य की बीमारियों से लड़ने की शक्ति समाप्त हो जाती है और उसका इम्यून सिस्टम (immune system) समय के साथ कमजोर हो जाता है। ऐसी दशा में व्यक्ति यदि किसी बीमारी का शिकार हो जाता है तो वह स्वस्थ नहीं हो पाता। एड्स ने पूरे संसार की जनसंख्या को खतरे में डाल दिया है। भारत सरकार ने एड्स को रोकने के लिए लोगों में जागृति पैदा करने तथा विषाणु से प्रभावित लोगों का इलाज करने के लिये केन्द्र खोले हैं।

### पाठगत प्रश्न 21.3

1. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के उद्देश्य लिखें।

## 21.5 कीमत वृद्धि को रोकना

लोग बाजार में विभिन्न वस्तुएं खरीदने के लिए कीमत चुकाते हैं। यदि कीमतें बढ़ जाती हैं तो उतनी ही मात्रा में वस्तुओं और सेवाओं को खरीदना कठिन हो जाता है। परिणामस्वरूप व्यक्तियों के संतुष्टि के स्तर में कमी आती है। जब आप अधिक कीमत का भुगतान करते

हैं आपकी विद्यमान आय पहले से कम प्रतीत होती है, क्योंकि अब आपको कम मात्रा में वस्तुओं की अधिक कीमत देनी पड़ती है। इससे क्रेताओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कीमते क्यों बढ़ती है? इसका सबसे सामान्य कारण यह है कि यदि वस्तु की वह मात्रा जो व्यक्ति बाजार से खरीदना चाहते हैं उसकी वास्तविक उपलब्धता से अधिक है तो उस विशिष्ट वस्तु की कमी हो जाएगी। इसके परिणामस्वरूप वस्तु की कीमत बढ़ जाएगी। यदि वस्तु का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में नहीं हुआ है तो वस्तु की कमी हो सकती है। उदाहरण के लिये यदि सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो खाद्यान्न का उत्पादन घट जाता है। दूसरा कारण उचित भंडारण सुविधाओं के अभाव में वस्तु बर्बाद हो सकती हैं। अंतिम कारण है, यदि विक्रेता वस्तु की जमाखोरी कर लेते हैं और इसे बेचते नहीं जिससे मानवनिर्मित कमी हो जायगी। विक्रेता वस्तु की अधिक कीमत वसूल करने के लिए जानबूझ कर ऐसा करते हैं। जमाखोरी प्रायः अनिवार्य वस्तुओं जैसे प्याज, चावल, दवाईयां आदि की होती है। सरकार कीमत नियंत्रण में प्रमुख भूमिका निम्न प्रकार से अदा करती है :

(i) किसानों को विभिन्न प्रकार से सहायता करके जिससे अनाज के उत्पादन पर बुरा प्रभाव न पड़े। उदाहरण के लिए सरकार किसानों को बीज उर्वरक आदि नीची कीमत पर खरीदने की अनुमति देती है।

(ii) भंडारण गृह और कोल्ड स्टोरेज बनाकर अनाज और सब्जियां को ठीक प्रकार से रखने के लिए जिससे कि इस प्रकार की वस्तुओं की उपलब्धता की समस्या न हो।

(iii) अनिवार्य वस्तुओं की जमाखोरी पर कठोर निगरानी रखकर और दोषी को सजा देकर क्योंकि जमाखोरी एक अपराध है।

## 21.6 उच्च आर्थिक संवृद्धि प्राप्त करना

सरल रूप में हम आर्थिक संवृद्धि को देश की कुल आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। यह तभी संभव है जबकि भारत का कृषि और उद्योगों का उत्पादन बढ़े और सेवा क्षेत्र का भी वांछित ढंग से विस्तार हो। इस दिशा में सरकार द्वारा उठाये गये कुछ कदम निम्न प्रकार हैं :

1. भारत दूसरी पंचवर्षीय योजना अर्थात 1956 से छोटे पैमाने, बड़े पैमाने और भारी उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन देता रहा है। ये उद्योग, मनुष्यों के उपयोग के लिए वस्तुओं का उत्पादन, आधारित संरचना का निर्माण करने के लिए आवश्यक मशीनें और उपकरणों का उत्पादन करते हैं और सेवा क्षेत्र के विस्तार में सहायता करते हैं। उद्योग बहुत सी नौकरियां और ऊँची मजदूरी उपलब्ध कराते हैं।

2. सरकार खाद्यान्नों के उत्पादन को सुधारने के लिए अच्छी आगतों जैसे उत्तम बीज, खाद आदि के प्रयोग को प्रोत्साहन देती रही है।

3. सड़कों, रेलवे लाइन, हवाई अड्डों, संचार टावर, बिजली आदि के रूप में बेहतर आधारिक संरचना के कारण भारत का सेवा क्षेत्र तीव्र गति से बढ़ रहा है।

इस गति को बनाये रखने के लिए सरकार ने नियमों तथा उपनियमों में सुधार किया है जिससे कि लोग विकास की प्रक्रिया में आसानी से भाग ले सकें। ये कदम आर्थिक सुधार कहलाते हैं।

## पाठगत प्रश्न 21.4

1. एक क्रेता के लिए कीमत वृद्धि बुरी क्यों है?
2. जमा खोरी का अर्थ बताओ।
3. आर्थिक संवृद्धि की परिभाषा दो।

## आपने क्या सीखा

- रोजगार सृजन करने और निर्धनता उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा कार्यक्रम हैं - महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना और स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना।
- शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए जैसे दोपहर का भोजन, साक्षर भारत, सर्व शिक्षा कार्यक्रमों आदि को लागू किया गया है।
- अच्छी स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, एड्स नियंत्रण आदि कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।
- कीमत वृद्धि नियंत्रण और आर्थिक संवृद्धि की प्राप्ति भी सरकार के सामने चुनौतियां हैं जिनकों अन्य बातों के अतिरिक्त उत्पादन को प्रोत्साहन देकर हल किया जाता है।

## पाठान्त प्रश्न

1. निर्धनता उन्मूलन योजनाएं क्या हैं? किसी एक की व्याख्या करो।
2. प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए किन्हीं दो योजनाओं का वर्णन करो।
3. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. कीमत वृद्धि के नियंत्रण के लिए कुछ उपाय दीजिए।
5. आर्थिक संवृद्धि प्राप्त करने के लिए सरकार क्या कर रही है?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 21.1

1. 2400 कि. कैलोरी प्रति दिन प्रति व्यक्ति
2. 43 करोड़
3. स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना

### पाठगत प्रश्न 21.2

1. (अ) विद्यालयों में सभी बच्चों का नामांकन
   (ब) शिक्षा गारंटी केन्द्रों का निर्माण
   (स) 'विद्यालय के कैम्प में वापस' भेजकर सत्कार करना
2. (i) हर समुदाय में बालिकाओं के लिए आदर्श विद्यालयों की स्थापना
   (ii) बालिकाओं को वर्दी और अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना
   (iii) बालिकाओं को पढ़ाने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण देना
3. दोपहर का भोजन समाज के विभिन्न वर्गों के बच्चों को एक साथ खाने की अनुमति देता है और एक दूसरे के प्रति सद्भावना का विकास करता है।

### पाठगत प्रश्न 21.3

1. (i) स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों को शक्तिशाली बनाना।
   (ii) बीमारियां जैसे मलेरिया, कालाजार, अंधापन, आयोडिन की कमी, तपेंदिक, फाइलेरिया, कुष्ठ रोग आदि को दूर करना।

### पाठगत प्रश्न 21.4

1. क्रेता को अपनी आय से पहले से अधिक मुद्रा का भुगतान करना पड़ता है यह एक बोझ बन जाता है।
2. जमाखोरी से अभिप्राय वस्तुओं की कृत्रिम कमी करने के लिए गुप्त रूप से भंडारण करना
3. आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से है।